RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)

# मार्क्सवादी विचारधारा का भारतीय इतिहास लेखन पर प्रभाव

डॉ0 मनीषा कुमारी

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

---

इतिहास लेखन अतीत का व्याख्यान मात्र नहीं है। यह उन आख्यानों में निहित सिद्धान्तों और प्रवृत्तियों के बारे में भी हैं। विचार की कुछ ऐसी प्रवृत्तियां हैं, जो कभी इतिहास के सिद्धांतों के रूप में प्रकट होती है, तो कभी इतिहास के आख्यान के पीछे अनकही आवधारणाओं में। यह प्रवृतियां कभी शुद्ध दार्शनिक विमर्श से पैदा होती है, तो कभी राजनीतिक चिंतन या सामाजिक सरोकारों से। इतिहास लेखन पर इन प्रवृतियां का प्रभाव पड़ा है, और उसने इन प्रवृतियों के विकास में योगदान भी दिया है। इस अध्याय में हम कुछ ऐसी चिंतन की प्रवृतियों पर विचार करेंगे जिन्होंने हाल के दशकों में इतिहास-लेखन को प्रभावित किया है। एक छोटे निबंध की सीमाओं में इन प्रवृतियों और उनके सैद्धांतिक आधार का विवरण देना आसान कार्य नहीं है। इन सिद्धान्तों के विकास की प्रक्रिया तीव्र वाद-विवाद का विषय रही है।

यह प्रश्न हमें इतिहास-लेखन और समाज के बीच संबंध के केन्द्र बिन्दु तक ले जाता है जो ऐतिहासिक अन्वेषण को जन्म देता है और उसका पोषण करता है। जैसे-जैसे मानव समाज के विकास हुआ है। नये मुद्दे सामने आए हैं या पुराने मुद्दों को नए ढंग से सोचा जाने लगा है। उदाहरण के तौर पर शोषित वर्ग और इतिहास लेखन के बीच का सम्बन्ध। शोषितों की अधीनता और उनके सशक्तिकरण से संबंधित चिंताओं और बहसों ने इतिहास-लेखन में इन मुद्दों के प्रति संवेदना पैदा की है।यह महसूस किया जाने लगा कि शोषित वर्ग इतिहास के पृष्ठों में अदृश्य हैं और परंपरागत इतिहास बड़े पुरूषों की कहानी मात्र बनकर रह गया है। फलस्वरूप, अब ऐसे इतिहास की खोज शुरू हो गई है जिसमें शोषित वर्ग भी शामिल हों। इसके कारण ऐतिहासिक अन्वेषण का क्षेत्र बहुत बढ़ गया है और इस परिवर्तन को इतिहास-लेखन में एक क्रांति के रूप में समझा जा सकता है।

इस काल में इतिहास के अन्य उपेक्षित पहलू पर प्रकाश डाला गया है नस्ल और नस्ल के संबंधों का मुद्दा। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया तथा पूर्व उपनिवेशों की आजादी के बाद नस्लवाद को साम्राज्यवादी विचार और व्यवहार के पहलू के रूप में पहचाना गया। यूरोप में नाजीवाद की परिघटना के आलोचनात्मक रूप से समझने की कोशिश ने भी इसी मुद्दे पर ध्यान केन्द्रित किया। हाल के वर्षों के बहुजातीय समाजों में नस्लीय समस्या और भूमंडलीकरण के युग में बड़े पैमाने पर प्रजनन ने इतिहास लेखक के नस्ल के मुद्दे पर ध्यान आकर्षित किया है।

इतिहास लेखन में मार्क्सवाद की प्रासंगिकता निर्विवाद है। उदाहरण के लिए ऐसी अनेक राजनीतिक इकाइयां है। राजनीति दलों से लेकर राज्यों तक) जो अपने को मार्क्सवादी घोषित करती हैं। 20 वीं सदी के अधिकतर समय में उनकी उपस्थिति, उनका राजनीतिक व्यवहार और विचारधारात्मक एजेन्डा मार्क्सवादी है। ऐतिहासिक दृष्टि से संचालित था। जहां इस दृष्टि में बहुत परिवर्तन नहीं हुआ है, इतिहास-लेखन में शास्त्रीय मार्क्सवादी दृष्टिकोण में बहुत बदलाव आया गया है।

अन्त में इस बात ध्यान देना चाहिए कि जहां लिंगभेद, नस्ल और वर्ग की शब्दावलियां अब तक वर्णित इकाइयों के केन्द्र में है जहां आधुनिकता शब्द उत्तर आधुनिकतावाद के समर्थक कम ही हैं, लेकिन साहित्यिक आलोचना है।

मार्क्सवादी परंपरा की शुरूआत कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक ऐंगल्स (1820-1895) से हुई। यूरोपीय देशों में राजनीतिक और सैद्धांतिक स्तरों पर आए परिवर्तन जिन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोप के मार्क्सवादी सिद्धान्तों के बीच इतिहास-लेखन के प्रति सुस्पष्ट रूप से विभिन्न दृष्टिकोणें को जन्म दिया। इस तरह के लेखन ने भारत सहित अनेक देशों के इतिहासकारों को प्रभावित किया। इन इतिहासकारों द्वारा स्थापित नयी प्रस्थापनाओं का पूरी दुनिया में इतिहास-लेखन की दिशा पर जबर्दस्त प्रभाव पड़ा। उनके शोध की गहनता, उनके कार्यों का परिणाम, उनके विषय का विस्तार तथा अतीत के समझने में उनकी अंतदृष्टि संभवत: अनाल स्कूल के इतिहासकारों के लेखन को छोड़ दें तो बेजोड़ थी। इन नये मार्क्सवादी इतिहासकारों ने जिन बौद्धिक स्रोतों से सामग्री ली थी और जिन क्षेत्रों में प्रवेश किया था उनका इससे पूर्व के मार्क्सवादी इतिहासकारों ने अन्वेषण नहीं किया था। हम ब्रिटिश मार्क्सवादी इतिहासकारों पर विशेष ध्यान देंगे जिनका भारतीय इतिहासकारों पर बहुत स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है। लेकिन हम पश्चिम के कुछ अन्य मार्क्सवादी इतिहासकरों की भी चर्चा करेंगे जिनका मार्क्सवादी इतिहास-लेखन को नयी दिशा देने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved  ISSN: 2349-7637 (Online)

प्रारंभ से ही इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि इतिहास-लेखन की मार्क्सवादी परंपरा एक लंबी और विविधतापूर्ण परंपरा है। इसका विश्व के अनेक हिस्सों में इतिहास लेखन पर प्रभुत्व रहा और शेष हिस्से में इसकी अत्यंत महत्वपूर्ण उपस्थिति रही है। 20वीं सदी के अधिकांश महत्पूर्ण इतिहासकार किसी न किसी रूप में इतिहास के मार्क्सवादी सिद्धांतों से प्रभावित रहे हैं। जैसा कि एक महत्वपूर्ण टिप्पणीकार एस.एच. रिग्बी ने कहा कि मार्क्सवादी इतिहास लेखन के व्यापक सर्वेक्षण का प्रयास कठिन है क्योंकि यह वस्तुत: विश्व का इतिहास लिखने जैसा होगा। इसके अलावा इस बात पर भी ध्यान देने की जरूरत है कि मार्क्सवादी इतिहास-लेखन किसी एकाश्म, एकरूप और सनातन स्थिति का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। मार्क्सवादी इतिहासकार प्राय: एक दूसरे से असहमत रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने इतिहास के विविध पहलुओं पर काम किया है।

मार्क्स और एंगेल्स के संचित लेखन ने ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत की स्थापना की जिसने आदर्शवादी दर्शन के विभिन्न रूपों को चुनौती दी। इतिहास-लेखन के स्तर पर इसने व्यक्तियों से वर्गों पर उच्च स्तर की राजनीति से अर्थव्यवस्था और जन राजनीति पर, राजनयिकों से क्रांतिकारियों पर और छिटपुट कारण-कार्य संबंधों से उत्पादन पद्धति तथा सामाजिक बनावट पर ध्यान केन्द्रित किया। इस सैद्धांतिक क्रांति ने इतिहास-लेखन की दिशा को जबर्दस्त ढंग से प्रभावित किया।

जहां तक इतिहास के मार्क्सवादी सिद्धांत का प्रश्न है, एस.एच. रिग्बी ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि ऐतिहासिक भौतिकवाद के निर्माता मार्क्स और एंगेल्स इतिहास की तीन विभिन्न अवधारणाओं से गुजरे। प्रारंभिक अवस्था में हेगेल के प्रभाव में उन्होंने इतिहास को मानव अनुवंशिकी के अर्थों में देखा। इसका अर्थ यह हुआ कि इतिहास की गति को एक ऐसे अति मेहराबाद प्रगति के रूप में देखा गया जिससे होकर मानवता पूरी तरह मानवीय, स्वतंत्र और तर्कसंगत समुदाय का स्वरूप ग्रहण करने से पूर्व आत्मा अपवर्तन सामाजिक सूक्ष्मीकरण ने आवश्यक नकारात्मक दौर से गुजरते हुए अपने पूर्ण आत्मा करती है। बाद में 1840 के दशक के मध्य में मार्क्सऔर एंगेल्स ने दी होली फेमिली आइडियोलाजी जैसी कृतियों में उपयोगितावादी दृष्टिकोण अपनाया जहां व्यक्तियों और जरूरतें अपेक्षाकृत ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है। अंतत: बाद की कृतियों में मसलन कांट्रीव्यूशन टू ऑफ पोलिटिकल इकॉनामी कैटिपल और एंटीड्यूहरिंग की प्रस्तावना में एक विधि विज्ञान कोण अपनाया जिसमें मानवीय माध्यम को महत्वपूर्ण नहीं समझा गया। इसकी बजाय मानव एक ऐसी प्राकृतिक प्रक्रिया के सदृश्य समझा गया जो उन आंतरिक गुप्त नियमों के अनुसार हैं जिसे उद्घाटित करना इतिहासकार का काम है।

मल्थुसर ने भी युवा मार्क्स जिनका दृष्टिकोण हेगेलवादी और मानवतावादी था तथा परिपक्व ढांचागत अर्थों में सोचते थे, में भेद किया। अल्थुसर का मानना था कि बाद वाले मार्क्स ही सही से ही इतिहास तथा समाज का मार्क्सवादी सिद्धांत पैदा हुआ होगा। जी.ए. कोहैन ने इतिहास के सिद्धांत पैदा हुआ होगा। जी.ए. कोहैन ने इतिहास के सिद्धांत के एक उल्लेखनीय अध्ययन में दलील दी है कि इस सिद्धांत के अनुसार उत्पादक समाज की मुख्य चालक शक्ति है। उत्पादक शक्तियां, उत्पादन साधनों और उत्पादन के लिए इस्तेमाल होनेवाला कच्चा माल तथा श्रम की प्रक्रिया का सम्मिलित रूप से संबंध समाज के उत्पादन के संबंधों दोनों को मिलाकर उत्पादन निर्माण होता है।

मार्क्स और ऐंगल्स के विभिन्न ग्रंथों के आधार पर समाज के एक तीन-स्तरीय मॉडल की पहचान की जा सकती है जो उत्पादक शक्तियां उत्पादन के सामाजिक संबंधों की प्रकृति का निर्धारण करती है, जो राजनैतिक वैचारिक और वैधानिक अधिरचना का निर्माण करते हैं। उत्पादक शक्तियों में लगाातर विकास होता है और जब यह विकास एक सीमा से बाहर चला जाता है तो उत्पादन के साधन उनके लिए पांव की बेड़ी बन जाते हैं। ऐसी स्थिति में उत्पादन संबंध टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाते हैं और विकसित उत्पादक के साथ तालमेल बैठाने के लिए नये उत्पादन संबंधों का गठन किया जाता है। इसी के अनुसार अधिरचना का गठन होता है। इसी योजना के तहत समग्र मानव इतिहास कुछ उत्पादन पद्धतियों में विभाजित थे- आदिम साम्यवाद, ऐशियाटिक, प्राचीन, सामंती और पूंजीवादी। भावी समाज समाजवादी आइडियोलॉजी उत्पादन पद्धति को जन्म देगा। इस सिलसिले में मार्क्स और ऐंगल्स ने विजर्मन लॉबी तथा कंट्रीब्यूशन टूदि क्रिटिक ऑफ पोलिटिकल इकोनॉमी के प्रस्तावना में महत्वपूर्ण दलीलें दी है। अपनी इस दूसरी पुस्तक में मार्क्स ने लिखा :

अस्तित्व के सामाजिक उत्पादन में मनुष्य अनिवार्य रूप से एक निश्चित संबंधों में प्रवेश करता है जिसे उत्पादन संबंध कहते हैं और जो इनकी इच्छा से स्वतंत्र है। उत्पादन संबंधों की समग्रता के अंतर्गत समाज की आर्थिक संरचना और वास्तविक बुनियाद आते हैं जिन पर एक वैध और राजनीतिक अधिरचना खड़ी होती है जिसके अनुरूप सामाजिक चेतना के निश्चित स्वरूपों का निर्माण होता है। भौतिक जीवन न पद्धति सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक जीवन प्रक्रिया का अनुकूलन करती है। मनुष्य अस्तित्व का निर्धारण नहीं करती बल्कि उनके सामाजिक अस्तित्व, उनकी चेतना का निर्धारण करती है।

मार्क्स और ऐंगल्स के तुरंत बाद के मार्क्सवादी सिद्धांतविदों और इतिहासकारों ने अपने सैद्धांतिक और इतिहास विषय कार्यों में तर्क की इसी दिशा में पालन किया। काउत्की, प्लेखानीव, लेनिन, बुखारिन, और ट्रांस्टकी जैसे मार्क्सवादियो के लिए इतिहास की यह

व्याख्या मार्क्सवाद का आधिकारिक हिस्सा के मार्क्सवादी सिद्धांत की व्याख्या के लिए अनेक पुस्तकें लिखी गयीं। फैंज महरिंग ने 1993 में ऑन हिस्टॉरिकल मैटिरियलिज्म लिखा। अंतोनिया लैब्रिओला ने 1896 में एसेज ऑन दि मैटियालिस्ट कंसेप्शन ऑफ हिस्ट्री लिखा और काउत्स्की ने मैटिरियालिस्ट कांसेप्शन ऑफ हिस्ट्री लिखा जिसका प्रकाशन 1927 में हुआ। इन पुस्तकों का उद्देश्य इतिहास के मार्क्सवादी दृष्टिकोण को अंतिम स्वरूप देना था। इन्होंने आमतौर पर उत्पादक शक्तियों के महत्व को रेखांकित किया क्योंकि इनके अनुसार यही उत्पादन संबंधों को और इस प्रकार समग्र रूप से समाज की प्रकृति का निर्धारण करती है। प्राय: मार्क्स के इस वक्तव्य को उद्धृत किया जाता है जिसमें उन्होंने कहा था कि हाथ से चलनेवाली मिल ने आपको सामंतों का समाज दिया और भाप से चलनेवाली मिल ने औद्योगिक पूंजीपतियों का समाज दिया।

इसके अलावा शुरूआती दिनों के मार्क्सवादी के बीच अर्थव्यवस्था और उत्पादन पद्धति के अध्ययन को जबर्दस्त महत्व मिला। आर्थिक स्थितियों तथा पूंजीवाद के साम्राज्यवाद में विकास को लेकर अनेक पुस्तकें लिखी गयीं। काउत्स्की ने 1899 में एग्रेरियन क्वेशन शीर्षक की एक पुस्तक लिखी, जिसमें यूरोप तथा अमेरिका के कृषि में आए परिवर्तनों की खोज की गयी थी। उसी वर्ष वी.आई. लेनिन (1870–1924)ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक दि डेवलपमेंट ऑफ कैपिटलिज्म इन रशिया लिखी। 1910 में रूडोल्फ हिल्फरदिग ने फायनेंस कैपिटल प्रकाशित किया, जिसमें पूंजीवाद के बदलते स्वरूप और इजोदारी, केन्द्रीयकरण, व्यापार, युद्धों तथा आक्रामक विस्तार में इसके विकास की खोज की गयी थी। रोजा लग्जमबर्ग की पुस्तक एक्यूमलेशन ऑफ कैटिपल, निकोलाई बुखारिन की पुस्तक इंपिरिलिज्म एंड वर्ल्ड एकॉनॉमी (1915) और लेनिन का विख्यात अध्ययन इंपीरिलिज्म दि हाइएस्ट स्टेज ऑफ कैपिटलिज्म (1915) इसी दिशा में किये गये अध्ययन थे। तो भी मार्क्स और एंगेल्स दोनों ने इतिहास का एक वैकल्पिक नजरिया प्रस्तुत किया जिसमें उत्पादन के सामाजिक संबंध इतिहास की धारा को परिवर्तित करने में अपेक्षाकृत ज्यादा महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाते हैं। वस्तुत: जब उत्पादक शक्तियों की निर्णयकारी व्याख्याएं रूढ़ होने लगी तो ऐंगल्स ने इनमें सुधार करने का प्रयास किया। 1890 में अर्नस्ट ब्लाख को लिखे एक पत्र में ऐंग्लस ने बताया कि अपने सिद्धांत के बारे में वह और मार्क्स क्या सोचते हैं : मार्क्स और मुझे एक हद तक इस तथ्य के लिए दोषी ठहराया जाना चाहिए कि युवा लेखकों ने आर्थिक पक्ष पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया था और हमने हमेशा समय, स्थान या अवसर की कमी के कारण अन्य तत्वों को, जो इस अंत:क्रिया में शामिल थे, अपना अधिकार बनाने की अनुमति नहीं दी। उन्होंने आगे लिखा : इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा के अनुसार इतिहास का निर्धारक तत्व अंतत: वास्तविक जीवन में उत्पादन और पुनरोत्पादन है। मार्क्स ने या तो मैंने कभी भी इससे ज्यादा पर जोर नहीं दिया। आर्थिक स्थिति आधार है लेकिन उसके स्वरूप का निर्धारणकरते हैं, अधिरचना के विभिन्न तत्व मसलन वर्ग संघर्ष के राजनीतिक स्वरूप और इसके नतीजे, सफलतापूर्वक लड़े गये युद्ध के बाद विजेता वर्ग द्वारा बनाया गया संविधान आदि, कानून का स्वरूप और यहां तक कि इन वास्तविक संघर्षों के उन योद्धाओं के मस्तिष्क बने प्रतिबिंब, राजनीतिक, वैधानिक, दार्शनिक सिद्धांत, धार्मिक विचार में ये सारी चीजें ऐतिहासिक संघर्ष की गति को भी प्रभावित करती है। इन सभी तत्वों के बीच एक अंत: क्रिया होती है और अन्तत: दुर्घटनाओं से होते हुए आर्थिक गति अंतत: अपनी अनिर्वायता स्थापित करती हैं– हम अपना इतिहास बनाते हैं लेकिन प्रारंभ में बहीतु निश्चित पूर्वधारणाओं न कि स्थितियों के अंतर्गत। इनमें से आर्थिक पक्ष ही अंतत: निर्णायक होता है।

## InHk xFk&Iph

1. ए.जी. विजेरी : इन्टरप्रिटेशन्स ऑफ हिस्ट्री, 1961
2. एम.ए. बोवर : मार्क्स इंटरप्रेटेशन ऑफ हिस्ट्री
3. बुद्ध प्रकाश : इतिहास दर्शन
4. टेलर : कम्यूनिस्ट मैनीफेस्टो
5. राम मनोहर लोहिया : इतिहास चक्र
6. रमेश चन्द्र दत्त : इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया, भाग–1
7. आर.सी. दत्त : इंडिया इन दि विक्टोरियन एज
8. दत्त : इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया, भाग–1

*2016, RHIMRJ, All Rights Reserved*  *ISSN:* 2349-7637 (Online)